द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्
राजस्थान संस्कृत अकादमी
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
के संयुक्त तत्त्वावधान में

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य का दार्शनिक संसार
The Philosophical World of Jagadguru Ramanandacharaya

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

27–28 फरवरी एवं 1 मार्च, 2023

अनन्तानन्द, कबीर, रैदास, धन्ना, सैन,पीपा इत्यादि 12 शिष्यों के साथ विराजमान जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज

अनादि, वेदमूलक एवं सीतानाथ भगवान् श्रीराम द्वारा प्रवर्तित श्रीसम्प्रदाय अपने उदार सार्वभौम दृष्टिकोण से अतुलनीय व अनुपम है। भगवान् श्रीराम ने वेदविहित सभी मान्यताओं का पूर्णतः पालन करते हुए परमकल्याणमय वैदिक सनातन धर्म को सर्व–जनसुलभ बनाया तथा कौल–भील–किरात–निषाद तक पहुंचाया। परमात्मा श्रीरामजी ने साधनविहीनों को भवसागर से पार करने के लिए वेदों के सार–सर्वस्व भक्तिरूपी सेतु का निर्माण किया तथा उसको स्वयं प्रचारित–प्रसारित भी किया। उसी परमोदार भक्ति सेतु का जीर्णोद्धार मध्यकाल में जगद्गुरु स्वामी श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज ने किया। जिसका संकेत भक्तचरित्र के सर्वश्रेष्ठ द्रष्टा व अनुपम गायक नाभादासजी ने भक्तमाल में किया है –

बहुत काल वपु धारिकै प्रणत जनन को पार दिय।
श्रीरामानन्द रघुनाथ ज्यों दुतिय सेतु जग तरण किय।।

स्वामी श्रीरामानन्दाचार्यजी ने जहाँ से अपने भक्ति आन्दोलन का शुभारम्भ किया, वह काशी का पञ्चगङ्गा घाट है। उस पर श्रीमठ है। श्रीमठ अनादि तथा परममङ्गलकारी निर्गुण व सगुण श्रीरामभक्ति परम्परा का एकमात्र मुख्यालय है। श्रीमठ में ही स्वामी रामानन्दजी ने अनन्तानन्द, रैदास, कबीर, धन्ना जाट, सेन नाई, पीपाजी एवं सुरसरि जैसे भक्तों को दिव्य आध्यात्मिक जीवन प्रदान किया था। स्वामी रामानन्दजी महाराज के प्रशिष्यों में श्रीकृष्णदास 'पयोहारी', गोस्वामी श्रीतुलसीदास, श्रीकील्हदेव, श्रीअग्रदास, श्रीनाभादास, श्रीमीराबाई, श्रीबालानन्दजी, श्रीटीलाजी एवं श्रीकूबाजी इत्यादि आदित्य के समान भारतीय आध्यात्मिक गगन को आज भी आलोकित कर रहे हैं।

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, राजस्थान संस्कृत अकादमी एवं जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वाधान में 'जगद्गुरु रामानन्दाचार्य का दार्शनिक संसार' पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 27–28 फरवरी एवं 1 मार्च, 2023 को हो रही है। संगोष्ठी में आपके शोध–पत्र सादर आमंत्रित हैं।

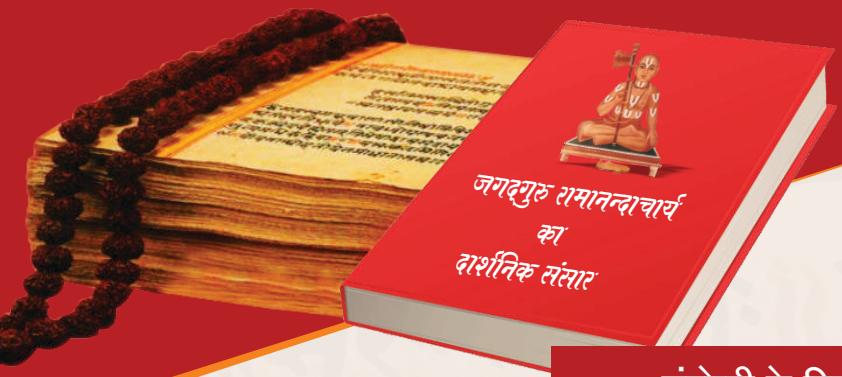

संगोष्ठी के विमर्श–बिंदु

01. रामानन्द दर्शन में प्रमाण विमर्श
02. रामानन्द दर्शन में प्रमेय विमर्श
03. रामानन्द दर्शन में तत्त्व–संख्यान
04. ब्रह्मसूत्र और रामानन्दाचार्य
05. रामानन्दाचार्य की रचनाएं
06. रामानन्दाचार्य के दार्शनिक चिन्तन में पूर्वाचार्यों का प्रभाव
07. रामानन्द दर्शन पर पश्चाद्वर्ती वैचारिक संघर्ष
08. रामानुज दर्शन और रामानन्द दर्शन
09. रामानुजाचार्य और रामानन्दाचार्य के दृष्टि में औपनिषद–अद्वैत
10. विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त की उत्तर एवं दक्षिण की धाराएं
11. वैष्णव दर्शन जगत् में रामानन्दीय चिन्तन का योगदान
12. रामानन्दाचार्य और भगवदाचार्य
13. आधुनिक रामानन्दीय विचारधारा में परिवर्तन–विमर्श
14. रामानन्दाचार्य का दार्शनिक सिद्धान्त और सामाजिक समरसता
15. रामानन्द दर्शन में प्रपत्ति की अपूर्वता
16. रामानन्द दर्शन का गेय एवं प्राप्य
17. रामानन्द दर्शन में मुक्ति का स्वरूप
18. रामानन्द दर्शन में साधना–विमर्श
19. रामानन्द दर्शन और वैखानस आगम
20. रामानन्द दर्शन मे श्रीतत्त्व एवं उसका पुरुषकारत्व
21. रामानन्द दर्शन में अध्यासध्वंसलेश
22. रामायण में रामानन्द दर्शन के सूत्र
23. रामानन्द सम्प्रदाय के मठों का पौष्कल्य एवं उनकी लोकमंगल–प्रवृत्तियां
24. रामानन्द सम्प्रदाय की रसिक शाखाएं
25. रामानन्द सम्प्रदाय के द्वारे और अखाड़े
26. रामानन्द सम्प्रदाय के साधु और उनका वैविध्य
27. रामानन्द सम्प्रदाय की अवान्तर शाखाएं
28. रामानन्द सम्प्रदाय से निःसृत विविध संत एवं पंथ शाखाएं
29. गीता का आनन्दभाष्य
30. तुलसी साहित्य में रामानन्द दर्शन का पूर्ण निदर्शन
31. रामानन्दाचार्य की शिष्य परम्परा द्वारा उनके दार्शनिक सिद्धान्त का प्रयोग
32. वैश्विक दृष्टि में रामानन्दाचार्य और उनका दर्शन
33. पाश्चात्य मनीषियों द्वारा रामानन्दाचार्य की दृष्टि का सर्वेक्षण
34. भारतीय भाषाओं में रामानन्दाचार्य और उनकी परम्परा
35. रामानन्द दर्शन का शिक्षण और उस पर अनुसंधान
36. रामानन्द सम्प्रदाय की भाष्य–परम्परा

संरक्षक

प्रोफेसर डॉ. रघुवेन्द्र तंवर
अध्यक्ष, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली – 110062

प्रोफेसर डॉ. रामसेवक दुबे
कुलपति, ज.रा. राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
जयपुर – 302026

डॉ. सरोज कोचर
अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी
जयपुर

समन्वयक

प्रोफेसर डॉ. सच्चिदानन्द मिश्र
सदस्य सचिव, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली – 110062

शास्त्री कोसलेन्द्रदास
अध्यक्ष, दर्शन विभाग, संस्कृत विश्वविद्यालय
92143 16999

संजय झाला
निदेशक, राजस्थान संस्कृत अकादमी
94140 35450

सह–समन्वयक

डॉ. देवेन्द्र कुमार
सहायक आचार्य, वेद विभाग
88224 67198

डॉ. शत्रुघ्न सिंह
सहायक आचार्य, योग विभाग
96633 06972

डॉ. जे. एन. विजय
सहायक कुलसचिव, शैक्षणिक शाखा
94143 48117

पंजीयन

- पंजीयन शुल्क शिक्षक एवं अन्य 1500 रुपये, शोधार्थी 1000 रुपये एवं विद्यार्थी 800 रुपये।
- पंजीयन शुल्क नगद जमा करवाया जा सकता है अथवा जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के Indian Bank के Account No. 21099915439, Branch : Rajasthan Sanskrit University, IFS Code : IDIB000R530 में भी जमा करवाया जा सकता है।

अन्य सूचनाएं

- पंजीयन एवं शोध पत्र प्रेषण की अंतिम तिथि 24 फरवरी 2023 है।
- आलेख कृतिदेव10 फॉण्ट साइज या मंगल यूनिकोड फॉण्ट साइज 12 में टंकित होने चाहिए।
- संभागियों को किसी प्रकार का यात्रा एवं अन्य भत्ते देय नहीं होंगे।
- संयुक्त शोध पत्र होने पर सभी लेखकों को पृथक्–पृथक् पंजीयन कराना होगा।
- आलेख e-mail : projrrsu@gmail.com पर प्रेषित किए जा सकते है
- शोध पत्रों को संपादित पुस्तक में प्रकाशित किया जाएगा।
- आलेख MS Word की फाइल में ही प्रेषित करें।

पंजीयन एवं शोध पत्र प्रेषण अंतिम तिथि
24 फरवरी 2023

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर – 302026
Jagadguru Ramanandacharya Rajasthan Sanskrit University, JAIPUR - 302026
e-mail : jrrsu@yahoo.com • @JRRSU
website : www.jrrsanskrituniversity.ac.in